किरातार्जुनीयम में द्रौपदीः एक सशक्त नारी

अश्विनी देवी*

संस्कृत साहित्य में महाकवि भारवि का नाम बड़े ही सम्मान से लिया जाता है। उनकी एक मात्र कृति है– किरातार्जुनीयम् जो 18 सर्गों में निबद्ध है। नायक मध्यम पाण्डव अर्जुन हैं और नायिका द्रौपदी। प्रस्तुत लेख द्रौपदी के चरित्र को प्रस्तुत करने का प्रयास है। द्रौपदी के चरित्र को प्रस्तुत करने का प्रयास है। द्रौपदी के माध्यम से भारवि ने यह बताने का प्रयास किया हैं कि महिला पात्र केवल सौंदर्य की ही नहीं अपितु सशक्तता की भी भी प्रतिनिधि हो सकती है। इसमें दौपदी की राजनीतिक सूझ बताने की कोशिश की गयी है।

संस्कृत साहित्य का विश्व साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत साहित्य को दो भागों में बांटा गया है। (1) वैदिक साहित्य (2) लौकिक साहित्य। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत वेद, पुराण, उपनिषद आदि आते हैं और लौकिक साहित्य में काव्य, महाकाव्य, नाटक, गीतिकाव्य आदि आते हैं। किरातार्जुनीयम् एक महाकाव्य है। महाकाव्य का लक्षण' साहित्य दर्पण में इस प्रकार दिया गया है–

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रेको नायकः सुरः।।[1]

श्रृगांरवीरशान्तानामेकोऽÂी रस इष्यते।

अÂानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसंधयः।।[2]

कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा।।[3]

किरातार्जुनीयम् में महाकाव्य के सभी लक्षण घटित होते है। यह वृहत्रयी का प्रथम ग्रन्थ है। यह महाभारत के वनपर्व की एक घटना को अधिकृत करके रचा गया है। वृहत्रयी के तीनों ग्रन्थ किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम् महाभारत के कथानक पर अवलम्बित है। महाभारत की नायिका द्रौपदी है। महाभारत की मुख्य घटना द्रौपदी–वस्त्र–हरण है जो महायुद्ध होने का कारण बनता है। महाभारत के आदि पर्व में कहा गया है कि नारी सदैव सम्मान योग्य होती है, उसकी सदैव वस्त्राभूषणों एवं अन्नादि से पूजा की जानी चाहिए। पत्नी

अतिथि प्रवक्ता जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद

को पुरूष का आधा अंग माना गया है तथा पत्नी ही पुरूष की परम मित्र और त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) का मूल है–

अर्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतम् सखा।

भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मित्रं मरिष्यतः।।[4]

उस समय स्त्री की सुदृढ़ स्थिति होने के बावजूद द्रौपदी को भरे सभा में आपमानित होना पड़ा।

द्रौपदी की उत्पत्ति–

द्रौपदी एक अद्भुद कन्या हैं कि जिसका जन्म यज्ञ कुण्ड से हुआ। द्रौपदी की उत्पत्ति का कथानक इस प्रकार है–पाञ्चाल नरेश राजा द्रुपद और गुरू द्रोणाचार्य मित्र थे। एक बार राजा द्रुपद ने द्रोणाचार्य का अपमान कर दिया। गुरू द्रोणाचार्य इस अपमान को भूल नहीं पाये। वह इसका प्रतिकार करना चाहते थे। इसलिए जब कौरवों और पाण्डवों की शिक्षा पूर्ण हुयी तो द्रोणाचार्य से गुरूदक्षिणा मागने को कहा गया। तब गुरू द्रोण ने राजा द्रुपद को बन्दी बनाकर अपने समक्ष लाने को कहा कौरवों के असफल रहने पर पाण्डवों ने द्रुपद को बंदी बनाकर द्रोणाचार्य के समक्ष उपस्थित किया। द्रोणाचार्य अपने अपमान का बदला लेते हुये द्रुपद का आधाराज्य स्वयं के पास रख लिया और शेष राज्य द्रुपद को देकर उन्हे मुक्त कर दिया। इस घटना से राजा द्रुपद अत्यन्त लज्जित हुये और उन्हे नीचा दिखाने का उपाय सोचने लगे। इसी चिन्ता में वे कल्याणी नगरी के याज तथा उपयाज नामक महान कर्मकाण्डी ब्राह्मण भाइयों से मिले। द्रुपद ने उनकी सेवा कर उन्हें प्रसन्न कर लिया एवं उनसे द्रोणाचार्य से प्रतिशोध का उपाय पूछा। तब बड़े भाई याज ने कहा–इसके लिए आप एक विशाल यज्ञ का आयोजन करके अग्निदेव को प्रसन्न कीजिए जिससे कि वे आपको महा बलशाली पुत्र का वरदान देंगे।

महाराज ने याज और उपयाज से उनके कथनानुसार यज्ञ करवाया। उनके यज्ञ से प्रसन्न होकर अग्निदेव ने उन्हे एक ऐसा पुत्र दिया जो सम्पूर्ण आयुध एवं कवच कुण्डल से युक्त था। उसके पश्चात् उस यज्ञ कुण्ड से एक कन्या उत्पन्न हुई जिसके नेत्र खिले हुए कमल के समान देदीप्यमान थे, भौंहे चन्द्रमा के समान वक्र थी तथा उसका वर्ण श्यामला था। बालक का नाम धृष्टद्युम्न एवं बालिका का नाम कृष्णा रखा गया जो कि राजा द्रुपद की बेटी होने के कारण द्रौपदी कहलायी। यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न होने के कारण याज्ञसेनी भी कही गयी। पांञ्चाल देश की राजकुमारी होने के कारण पांञ्चाली भी कहलायी। कहीं–कहीं द्रौपदी को इन्द्र की पत्नी शची का अवतार भी कहा गया है। महाभारत एवं किरातार्जुनीयम् में द्रौपदी कथा नायिका के रूप में वर्णित है। उसका पतिव्रता,

ओजस्विनी एवं स्वाभिमानी नारी के रूप में चित्रण किया गया है। वह उत्तम कोटि की नायिका है। पहले परकीया के रूप में एवं बाद में स्वकीया नायिका के रूप में उसका परिचय देखने को मिलता है। स्वकीया नायिका का लक्षण धनञजय ने इस प्रकार दी है–

मुग्धा मध्या प्रगल्भेति स्वीया शीलार्जवादियुक्।[5]

द्रौपदी की मनोव्यथाएं–

महाभारत काल में स्त्रीयों की दशा निरन्तर गिरती चली गई। उस समय यह मान्यता थी कि विवाहिता स्त्री का संरक्षण 'पति' द्वारा होता है। ऐसे समय में पाँच पतियों की पत्नी का भरी सभा में ऐसा अपमान! यज्ञ से उत्पन्न कन्या के प्रति मर्यादा का ऐसा अतिक्रमण! ऐसी स्त्री की पीड़ा का दंश उसके हृदय को प्रतिक्षण कितना उद्वेलित करता होगा।

महाकवि भारवि ने संभवतः इस स्वाभिमानी एवं गर्विता स्त्री की इसी पीड़ा को अनुभूत करते हुये किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में इसे उद्घाटित करने का प्रयास किया है। द्वैतवन में वनेचर जब दूर्योधन विषयक सभी जानकारी देकर चला जाता है तो अपमानित द्रौपदी युधिष्ठिर के क्रोध का उद्दीप्त करने वाले वचन का कथन करती है, क्योंकि वह कौरवों से प्राप्त अपमान तथा वनवास को सहन नहीं कर पा रही थी।

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृतीस्ततस्ततस्त्या विनियन्तुमक्षमा।
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीरूदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः।।[6]

भारवि ने द्रौपदी की अपार मानसिक व्यथा को बताने के लिए ही प्रथम सर्ग में द्रौपदी का विशेष रूप से वर्णन किया है। भारवि ने द्रौपदी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। द्रौपदी सोचती है कि मानव में व्याप्त चित्तवृत्तियों को अनेक रूपों वाली कहा जाता है। किन्तु निःस्पृह युधिष्ठिर को देशकर उनकी चित्तवृत्ति को वह समझ नहीं पाती। द्रौपदी का मानना है कि योगी हो या सांसारिक सबको अनुकूलता में सुख और प्रतिकूलता में दुःख का अनुभव होता है। यदि ऐसा नहीं है तो वहाँ निश्चित रूप से असामान्यता और विचित्रता को उत्पन्न करने वाली दशा उत्पन्न होती है। भीम, अर्जुन की दुर्दशा तथा नकुल–सहदेव की प्रताड़ना देखकर धैर्य और संयम का न टुटना, ऐसी असामान्य चित्तवृत्ति वाले युधिष्ठिर को देखकर आश्चर्य में पड़ी हुई द्रौपदी युधिष्ठिर के ही समक्ष उनके बुद्धिवैचिष्य पर कटाक्ष करते हुये कहती है–

इमामहं वेद न तावकीं धियं विचित्र रूपाः खलु चित्तवृत्तयः।
विचिन्तयन्त्या भवदापदं परां रूजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः।।[7]

द्रौपदी का चरित्र अनोखा है विश्व इतिहास में उस जैसी कोई दूसरी स्त्री नहीं हुई। द्रौपदी का अनन्त संताप उसका सम्बल था। संघर्षो में वह अकेली रही। द्रौपदी की विडम्बना तो देखिए–द्रुपद की बेटी, धृष्टद्युम्न की बहन, पांच राजाओं की पत्नी फिर भी अकेली।

द्रौपदी की बुद्धिमत्ता–

गुप्तचर द्वारा जब द्रौपदी यह जानती है कि दूर्योधन राजकार्य अच्छी तरह चला रहा है तथा प्रजा उसकी योजनाओं से सन्तुष्ट है तो उसने युधिष्ठिर के क्रोध को उत्तेजित करने वाली बाते कहना आरम्भ किया–

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यविक्षेप इवानुशासनम्।
तथाऽपि वस्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारी समयादुराधयः।।[8]

द्रौपदी ने अनुभव किया कि हमारे अकर्मण्य पति अभी तक उसका प्रतिकार भी नहीं कर सके तो वह अपने पूर्वजों की याद दिलाकर युधिष्ठिर को लज्जित करती है–

अखण्डमाखण्डलतुल्य धामभिश्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजैः।
त्वयाऽऽत्महस्तेन मही मदच्युता मतÂजेन स्रगिवापवर्जिता।।[9]

द्रौपदी का राजनीतिक ज्ञान–

किरातार्जुनीयम् के प्रथम द्वितीय व तृतीय सर्ग राजनीतिक ज्ञान का वर्णन है। द्रौपदी भी एक राजनीतिज्ञ है। उसके वचन राजनीति के गुढ़ रहस्य को सूचित करते है–

न समयपरिरक्षणं क्षमं ते निकृतिपरेषु परेषु भूरिधाम्नः।
अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि।।[10]

द्रौपदी युधिष्ठिर को सन्धि भंग करने की सलाह देती है। वह कहती है– आप शान्ति को त्यागकर अपने पूर्व तेज को शत्रुओं के विनाशार्थ पुनः प्राप्त करें। निःस्पृह मुनि लोग मनोविकारों को तिरस्कृत करके शान्ति द्वारा सिद्धि प्राप्त करते है, राजा नहीं–

विहाय शान्तिं नृप धाम तत्पुनः प्रसीदसंधेहि वधाय विद्विषाम्।
व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहा शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।।[11]

द्रौपदी का तर्क–

द्रौपदी युधिष्ठिर को धिक्कारती है और तर्क देती है कि स्त्री के अपहरण के समान राजलक्ष्मी का अपहरण हानिकारक है। अन्त में युधिष्ठिर को साहस देने के लिए वह कहती है कि सम्पदा और विपत्ति तो आती जाती रहती है अतः इनका रोना क्यों रोया जाय। इसी तर्क को मन में रखकर वह कहती है–

द्विषन्निमित्ता यदिदं दशा ततः समूलमुन्मूलयतीव मे मनः।
परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां पराभवोऽप्सुत्व एव मानिनाम्।।[12]

द्रौपदी एक पतिव्रता नारी है। वह अपने अपमान का बदला लेना चाहती है अपनी मनोव्यथा को कहने के बाद वह युधिष्ठिर के लिए मंगलकामना करती है कि राजलक्ष्मी उन्हे पुनः प्राप्त हो–

रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ,
दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः।।[13]

निष्कर्ष–

इतने वर्षो के पश्चात् महाभारत आज भी उतना ही प्रासंगिक है। वहीं समस्या और चुनौतियाँ स्त्रीयों के सामने है। आज भी द्रौपदीयों का अपमान हो रहा है। अपने अपमान की आग में तपती द्रौपदी कौरवों के दर्प को कुचलने को प्रण लेती है। युद्ध के लिए पाण्डवों के पौरूष को ललकारती हैं। उस वक्त द्रौपदी नारी मुक्ति आन्दोलन की नींव बन जाती है। किरातार्जुनीयम् की द्रौपदी के बुद्धिमत्ता, तर्क, ज्ञान के आगे पाण्डव विवश दिखते है। जब भी वह प्रश्न करती है पूरी सभा निरूत्तर हो जाती है। वास्तव में द्रौपदी महाभारत की एक सशक्त स्त्री पात्र है।

सन्दर्भ

1. साहित्य दर्पण 6/315 लेखक – आचार्य विश्वनाथ व्याख्याकार– अभिराजराजेन्द्र मिश्र प्रकाशक–अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
2. साहित्य दर्पण 6/317
3. साहित्य दर्पण 6/324
4. महाभारत आदि पर्व–68/41
5. दशरूपक प्रणेता–धनञजय प्रकाशक–रतिराम शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ द्वितीय प्रकाश–15 वीं कारिका

6. किरातार्जुनीयम् 1/27 लेखक–भारवि टीकाकार–डॉ0 राम सेवक दूबे प्रकाशक–शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
7. किरातार्जुनीयम् 1/37
8. किरातार्जुनीयम् 1/28
9. किरातार्जुनीयम् 1/29
10 किरातार्जुनीयम् 1/45
11. किरातार्जुनीयम् 1/42
12. किरातार्जुनीयम् 1/41
13. किरातार्जुनीयम् 1/46